

## गाजियाबाद जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन पर विद्यालय परिवेश के प्रभाव का एक अध्ययन

संदीप कुमार<sup>1</sup>,

प्रोफ. (डॉ.) आर. के. एस. अरोडा<sup>2</sup>

<sup>1</sup>शोधकर्ता, शिक्षा विभाग, भगवन्त विश्वविद्यालय, अजमेर, राजस्थान, भारत

<sup>2</sup>शोध निर्देशक, शिक्षा विभाग, भगवन्त विश्वविद्यालय, अजमेर, राजस्थान, भारत

**DECLARATION:** I AS AN AUTHOR OF THIS PAPER /ARTICLE, HERE BY DECLARE THAT THE PAPER SUBMITTED BY ME FOR PUBLICATION IN THE JOURNAL IS COMPLETELY MY OWN GENUINE PAPER. IF ANY ISSUE REGARDING COPYRIGHT/PATENT/ OTHER REAL AUTHOR ARISES, THE PUBLISHER WILL NOT BE LEGALLY RESPONSIBLE. IF ANY OF SUCH MATTERS OCCUR PUBLISHER MAY REMOVE MY CONTENT FROM THE JOURNAL WEBSITE. FOR THE REASON OF CONTENT AMENDMENT/ OR ANY TECHNICAL ISSUE WITH NO VISIBILITY ON WEBSITE/UPDATES, I HAVE RESUBMITTED THIS PAPER FOR THE PUBLICATION. FOR ANY PUBLICATION MATTERS OR ANY INFORMATION INTENTIONALLY HIDDEN BY ME OR OTHERWISE, I SHALL BE LEGALLY RESPONSIBLE. (COMPLETE DECLARATION OF THE AUTHOR AT THE LAST PAGE OF THIS PAPER/ARTICLE)

### सारांश –

उत्तर प्रदेश राज्य के गाजियाबाद जिले के प्राथमिक स्कूली शिक्षा का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को पढ़ना, लिखना और संख्यात्मक रूप से साक्षर बनाना है। हाल के दिनों में, यह ध्यान दिया जाता है कि ग्रामीण क्षेत्रों से अधिकांश प्राथमिक स्कूल के छात्र, न तो पढ़ सकते हैं और न ही सही लिख सकते हैं। उत्तर प्रदेश राज्य के गाजियाबाद जिले के प्राथमिक विद्यालय के परिणामों को देखते हुए, प्रदर्शन के स्तर और उनके शिक्षकों की क्षमता पर एक बड़ा सवाल है। प्राथमिक शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थियों की क्षमताओं और योग्यता की पहचान करना, उनके संज्ञानात्मक हितों और व्यक्तित्व को विकसित करना, पढ़ना, लेखन, संख्यात्मकता, संचार, स्वस्थ जीवन और सुरक्षित-आचरण में बुनियादी ज्ञान और कौशल बनाना है। उत्तर प्रदेश राज्य में डेवलपमेंट विजन 2025 सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन लाने के लिए शिक्षा क्षेत्र में उच्च प्राथमिकता देता है जिसे महत्वपूर्ण माना जाता है। शिक्षा को एक

मनोगत परिवर्तन के लिए और एक शिक्षित राष्ट्र के निर्माण के लिए एक रणनीतिक एजेंट के रूप में माना जाना चाहिए, जो पर्याप्त रूप से सक्षम और प्रतिस्पर्धात्मक रूप से उन विकास चुनौतियों को हल करने के लिए आवश्यक ज्ञान से सुसज्जित है जो राष्ट्र का सामना करते हैं। इसके प्रकाश में रचनात्मकता और समस्या निवारण को बढ़ावा देने पर ध्यान देने के साथ शिक्षा प्रणाली का पुनर्गठन और गुणात्मक रूप से परिवर्तन किया जाना चाहिए।

**मुख्य शब्द** – शिक्षा प्रणाली, छात्रों का शैक्षणिक प्रदर्शन, स्वस्थ, जीवन और सुरक्षित-आचरण

## परिचय

इस अध्ययन ने उत्तर प्रदेश राज्य के गाजियाबाद जिले में ग्रामीण प्राथमिक क्षेत्रों में छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन पर काम करने वाले सार्वजनिक प्राथमिक स्कूलों के शिक्षकों के प्रभाव की जांच की जाएगी। चूंकि प्राथमिक शिक्षा नागरिक के सामान्य विकास के लिए प्रारंभिक बिंदु है और शिक्षा के बाद के स्तरों के लिए बुनियादी आधार भी है, शिक्षक से बहुत कुछ अपेक्षित है। हर शिक्षा प्रणाली मानकों और गुणवत्ता में सुधार और रखरखाव के लिए अपने शिक्षकों की गुणवत्ता और उत्पादकता पर बहुत अधिक निर्भर करती है। 1961 में स्वतंत्रता के बाद से, भारतीय नेतृत्व ने बच्चों को शिक्षा प्रदान करने के लिए एक मजबूत प्रतिबद्धता दिखाई है। यह इस एहसास से आता है कि शिक्षा राष्ट्रीय विकास के लिए एक शर्त है। व्यापक समुदाय में सहायक विकास गतिविधियों में शिक्षकों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

## साहित्य की समीक्षा

मबुआ (2003) के अनुसार, नौकरी की संतुष्टि की घटना प्रेरणा से निकटता से संबंधित है। इसका तात्पर्य यह है कि प्रेरणा के सिद्धांत को नौकरी की संतुष्टि के सिद्धांत के रूप में भी माना जाता है। इस अध्ययन में, अच्छे शिक्षक काम का माहौल बेहतर प्रदर्शन और नौकरी की संतुष्टि के लिए प्रेरणा हैं। इस अध्ययन सिद्धांत को मोटे तौर पर दो अलग-अलग दृष्टिकोणों में वर्गीकृत किया जा सकता है प्रक्रिया और सामग्री सिद्धांत। सामग्री सिद्धांत से संबंधित है जो लोगों को प्रेरित करता है और व्यक्तिगत आवश्यकताओं और लक्ष्यों की चिंता करता है।

यह हिस्सा शिक्षकों के काम के माहौल और छात्र शैक्षणिक प्रदर्शन (उत्पादकता) से संबंधित समीक्षा सिद्धांतों पर ध्यान केंद्रित करता है। प्रेरणा सिद्धांत इस अध्ययन में भाग लेते हैं क्योंकि काम का माहौल प्रेरणा का हिस्सा है। इस अध्ययन का मार्गदर्शन करने वाला सिद्धांत हर्जबर्ग का प्रेरणा-स्वच्छता सिद्धांत है जो बताता है कि कार्यस्थल में कुछ कारक हैं जो नौकरी की संतुष्टि का कारण बनते हैं, जबकि एक अलग कारक नौकरी असंतोष का कारण बनता है (रॉबिंस 2004)।

## अध्ययन उद्देश्य

1. प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों में ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षक प्रभाव का विश्लेषण करना।

## शोध प्रश्न

1. प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों में ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षक का प्रभाव क्या है?

## कार्य परिवेश

कार्य परिवेश यह है जिसके तहत एक व्यक्ति या संगठन अपने कर्तव्यों का पालन करता है। कार्य परिवेश की विभिन्न श्रेणियां हैं। श्रेणियों में से कुछ भौतिक परिवेश, मानव परिवेश और सहकर्मियों और प्रशासकों के साथ संबंध, प्रणाली के भीतर बातचीत, और काम के क्षेत्र का सामान्य क्षेत्र है। इस अध्ययन के लिए शिक्षक के काम करने के परिवेश में स्कूल भवन, स्टाफ कार्यालय, प्रयोगशालाएँ, स्टाफ और विद्यार्थियों के लिए पुस्तकालयों की उपयुक्तता, मनोरंजक सुविधाएँ, काम के घंटे, कक्षा के आकार, शिक्षण और सीखने की सामग्री, घर से दूरी, सहायक शिक्षण और सीखने की तकनीक जैसी बुनियादी सुविधाएँ शामिल हैं।

### नमूने का आकार

गाजियाबाद के तीन ब्लॉक रजापुर, भोजपुर और लोनी प्रत्येक ब्लॉक से 5 स्कूलों का चयन किया जायेगा और उत्तरदाताओं का कुल नमूना 501 लिया जायेगा। एक एक जिला शिक्षा अधिकारी और एक शिक्षा निरीक्षक को लिया जायेगा। प्रत्येक स्कूल से एक एक प्रमुख को लिया जायेगा और प्रत्येक प्राथमिक विद्यालय से 10-10 शिक्षक (5 पुरुष और 5 स्त्री) और 20-20 (10 पुरुष और 10 स्त्री) छात्रों को लिया जायेगा इसके अलावा प्रत्येक ब्लॉक से 10-10 माता-पिता/हितधारक को लिया जायेगा। इस अध्ययन में सभी छात्र पांचवी कक्षा के होंगे।

### डेटा प्रस्तुति, विश्लेषण और चर्चा

#### नमूना अध्ययन उत्तरदाताओं की विशेषताएं

यह खंड उत्तरदाताओं की प्रकृति के बारे में उनके लिंग, आयु समूह, वैवाहिक स्थिति, कार्य अनुभव, उनके द्वारा शिक्षण करियर चुनने का कारण और क्या वे अन्य अवसरों के अलावा वही विकल्प चुन सकते हैं, के संदर्भ में जानकारी प्रस्तुत करता है। अध्ययन के उत्तरदाता प्राथमिक

विद्यालय के शिक्षक, प्राथमिक विद्यालय के छात्र, प्रधान शिक्षक, शिक्षा हितधारक, शिक्षा निरीक्षक और जिला शिक्षा अधिकारी थे।

प्राथमिक विद्यालय के पचास शिक्षकों को प्रश्नावली भरने के लिए दी गई थी, जिसमें से केवल 49 (98%) प्रश्नावली शोधकर्ता को वापस सौंपी गई। छात्रों को 60 प्रश्नावली दी गईं, लेकिन विश्लेषण के लिए केवल 59 (98%) प्रश्नावली भरी गईं। शिक्षा निरीक्षकों, जिला शिक्षा अधिकारियों, स्कूलों के प्रमुखों और शिक्षा हितधारकों का साक्षात्कार लिया गया।

**तालिका 4.1: सांख्यिकी (प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों की सामान्य विशेषताएँ)**

ID	SEX	AGE	MAR	ED	QUA	EXP	TEA	CHO
<b>N Valid</b>	150	150	150	150	150	150	150	150
<b>Missing</b>	0	0	0	0	0	0	0	0

ID- पहचान संख्या,,  
SEX- प्रतिवादी सेक्स,  
AGE- उत्तरदाताओं की उम्र,  
MAR- उत्तरदाताओं की वैवाहिक स्थिति,  
ED - उत्तरदाताओं की शिक्षा,  
QUA- उत्तरदाताओं की व्यावसायिकता का स्तर,

EXP- कार्य अनुभव,

TEA- वे शिक्षक बनना क्यों चुनते हैं इसका कारण, और

CHO- यदि उनके पास कोई विकल्प हो तो वे वही करियर चुनेंगे

उपरोक्त तालिका 4.1 प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों की संख्या दर्शाती है, जिन्हें भरने के लिए प्रश्नावली दी गई थी। वस्तुनिष्ठ और व्यक्तिपरक दोनों प्रकार के प्रश्न तैयार कर शिक्षकों को दिए गए। अध्ययन के लिए शिक्षकों की प्रस्तावित संख्या 60 थी लेकिन सर्वेक्षण के दौरान क्षेत्र में शिक्षक लक्ष्य से कम पाए गए। डेटा संग्रह के लिए सर्वेक्षण के दौरान, शोधकर्ता को पता चला कि, कुछ शिक्षक स्वास्थ्य, वित्तीय सेवाओं, पारिवारिक समस्याओं और अध्ययन सहित विभिन्न आपात स्थितियों के कारण अपने कार्यस्थल पर नहीं थे। बीच में कोई स्कूल नहीं था , सर्वेक्षण किए गए 15 स्कूल, जिनमें सभी शिक्षक डेटा संग्रह प्रक्रिया के दौरान कार्य केंद्र पर थे।

**तालिका 4.2: सार्वजनिक प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों का लिंग अनुपात**

वैध पुरुष/ महिला	आवृत्ति	प्रतिशत	वैध प्रतिशत	संचयी प्रतिशत
पुरुष	37	24.5	24.5	24.5
महिला	113	75.5	75.5	100
कुल	150	100.0	100.0	

स्रोत: फील्ड डेटा (2023 )

तालिका 4.2 परिणाम इंगित करता है कि 113 महिला उत्तरदाता और 37 पुरुष उत्तरदाता हैं। किलिमंजारो क्षेत्र के ग्रामीण क्षेत्रों में अधिकांश शिक्षक महिलाएँ थीं। कुल नमूने में 75.5% महिलाएं हैं और पुरुष केवल 24.5% हैं। जैसा कि आवृत्ति तालिका स्पष्ट रूप से दिखाती है, पुरुष और महिला की संख्या असंतुलित थी। सर्वेक्षण किए गए स्कूलों में पुरुषों की तुलना में महिला शिक्षकों की संख्या अच्छी थी।

**तालिका 4.3: प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों का आयु वर्गीकरण।**

	आवृत्ति	प्रतिशत	वैध प्रतिशत	संचयी प्रतिशत
21–30 वर्ष	17	11.33	11.33	11.33
31–40 वर्ष	23	15.34	15.34	26.67
41–50 वर्ष	48	32	32	58.67
51–60 वर्ष	62	41.33	41.33	100
कुल	150	100	100	

स्रोत: फील्ड डेटा ( 2023)

तालिका 4.3 150 उत्तरदाताओं का आयु वितरण प्रस्तुत करती है। उत्तरदाताओं की आयु सीमा 21 से 60 वर्ष के बीच थी। लगभग आधे उत्तरदाता बीच में थे 51–60 वर्ष की आयु. 150 उत्तरदाताओं में से, 62 शिक्षक 51–60 वर्ष समूह के हैं, जो नमूने में सभी शिक्षकों का 41.33% है, जबकि 17 उत्तरदाताओं की आयु 21–30 के बीच थी, जो पूरे प्रतिनिधि नमूने का 11.33% है। इससे पता चलता है कि ग्रामीण क्षेत्रों में अधिकांश शिक्षक वृद्ध हैं और पेंशन पाने की उम्र में हैं। ग्रामीण स्कूल में युवा शिक्षक विशेषकर लड़कियाँ बहुत कम थीं।

## निष्कर्ष

इस शोध परिणाम के आधार पर कई निष्कर्ष निकाले गए हैं

अध्ययन में पाया गया कि सरकार को शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों में शिक्षकों के वितरण पर अच्छी योजनाएँ स्थापित करने की आवश्यकता है ताकि गाजियाबाद के ग्रामीण और शहरी सार्वजनिक प्राथमिक विद्यालयों में कार्यभार को संतुलित किया जा सके। एक उचित मानव संसाधन वितरण योजना के माध्यम से, शिक्षकों का कार्यभार शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों में संतुलित किया जाएगा।

ग्रामीण सार्वजनिक प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि और मनोबल में सुधार के लिए प्रेरणा उपायों और उनके वेतन में सुधार की बहुत आवश्यकता थी। ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षकों को बनाए रखने के लिए अच्छी रणनीतियों की आवश्यकता थी ताकि दक्षता में सुधार किया जा सके और शिक्षकों के कार्यभार को कम किया जा सके जो बाद में छात्रों के खराब प्रदर्शन का कारण बनता है।

अच्छा शिक्षण कार्य वातावरण (घरों, स्टाफरूम, वॉशरूम और अन्य स्कूल बुनियादी ढांचे की उपलब्धता के रूप में) अपने काम को ठीक से करने में शिक्षकों की आत्म-प्रेरणा, नैतिकता और रचनात्मकता में योगदान दे रहा था। एक शिक्षक को कई प्रकार की परिस्थितियों की आवश्यकता होती है ताकि वह अपनी कार्यशील ऊर्जा को बढ़ावा दे सके और सीखने में सुधार के लिए अपने वातावरण का उपयोग कर सके।

सन्दर्भ

- [1] आरोनसो, डी, बैरो, एल और सैंड्रा, डब्ल्यू (2007)। शिकागो पब्लिक स्कूल में शिक्षकों और छात्रों की उपलब्धि। जर्नल ऑफ़ लेबर इकोनॉमिक्स 25 (1) 95–135
- [2] एडम, जे और कामुज़ोरा, एफ (2008)। बिजनेस स्टडीज के लिए रिसर्च मेथड्स, मजुम्बे बुक प्रोजेक्ट, मोरोगोरो, तंजानिया। एडगुन, ए.ओ. (1999)। "सामाजिक-आर्थिक लक्षण



- और शिक्षक प्रभावशीलता एकिटी राज्य, नाइजीरिया” बेनिन सिटी: अफ्रीकी जर्नल ऑफ एजुकेशन 4 (2): 180–181।
- [3] अजला, ई.एम. (2012) श्रमिकों के कल्याण, प्रदर्शन और उत्पादकता पर कार्यस्थल पर्यावरण का प्रभाव, अफ्रीकी संगोष्ठी: अफ्रीकी शैक्षिक अनुसंधान नेटवर्क का एक ऑनलाइन जर्नल 12 (1) 70–82
- [4] आर्य, डी. और जैकब, एस.एल. (1996) शिक्षा में अनुसंधान का परिचय। न्यूयॉर्क: होल्ट, राइनहार्ट और विंस्टन इंक. बेनेल, पी. (2004)। उप-सहारा अफ्रीका और एशिया में शिक्षक की प्रेरणा और प्रोत्साहन: विकास के लिए ज्ञान और कौशल।
- [5] ब्राइटन: मैकमिलन बेनेल, पी और मुकानुजी, एफ (2005)। क्या तंजानिया में शिक्षक प्रेरणा संकट है ? विकास के लिए ज्ञान और कौशल।
- [6] ब्राइटन: मैकमिलन बेरी, बी, स्माइली एम, और फुलर, ई (2008)। अंडरस्टैंडिंग टीचर वर्किंग एनवायरनमेंट: ए रिव्यू एंड लुक टू द फ्यूचर। सीटीक्यू। बोआ, वाई. पी. (2014)। किलिमंजारो क्षेत्र में माध्यमिक विद्यालय में उच्च शैक्षणिक प्रदर्शन के निर्धारक: एमए शोध प्रबंध, दार एस सलाम: तंजानिया के मुक्त विश्वविद्यालय
- [7] चोंजो, पी.एन. (1994) तंजानिया प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षा की गुणवत्ता: भौतिक सुविधाओं और शिक्षण शिक्षण सामग्री का आकलन। न्जंपिजप (नई श्रृंखला) दार एस सलाम विश्वविद्यालय 1, 36 – 46।
- [8] कोहेन, एल और मैनियन, एल (2001) शिक्षा में अनुसंधान के तरीके, (5वां संस्करण) लंदन: रॉथलेज फाल्मर.
- [9] कुकसी, बी, इशुमी, ए, मालेकेला, जी और गलाबावा, जे (1991)। तंजानिया पर प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के रहने की स्थिति का एक सर्वेक्षण। दार ए सलाम: तंजानिया डेवलपमेंट रिसर्च ग्रुप।
- [10] शिक्षा और प्रशिक्षण नीति (1995) संयुक्त गणराज्य तंजानिया।
- [11] शिक्षा और संस्कृति मंत्रालय शिक्षा और प्रशिक्षण नीति (2014) संयुक्त गणराज्य तंजानिया।

## Author's Declaration

I as an author of the above research paper/article, hereby, declare that the content of this paper is prepared by me and if any person having copyright issue or patent or anything otherwise related to the content, I shall always be legally responsible for any issue. For the reason of invisibility of my research paper on the website/amendments/updates, I have resubmitted my paper for publication on the same date. If any data or information given by me is not correct, I shall always be legally responsible. With my whole responsibility legally and formally have intimated the publisher (Publisher) that my paper has been checked by my guide (if any) or expert to make it sure that paper is technically right and there is no unaccepted plagiarism and hentriconane is genuinely mine. If any issue arises related to Plagiarism/ Guide Name/ Educational Qualification / Designation/ Address of my university/ college /institution/ Structure or Formatting/ Resubmission/Submission/Copyright/Patent/Submission for any higher degree or Job/Primary Data/Secondary Data Issues. I will be solely/entirely responsible for any legal issues. I have been informed that the most of the data from the website is invisible or shuffled or vanished from the database due to some technical fault or hacking and therefore the process of resubmission is there for the scholars/students who finds trouble in getting their paper on the website. At the time of resubmission of my paper I take all the legal and formal responsibilities, If I hide or do not submit the copy of my original documents(Aadhar/Driving License/Any Identity Proof and Photo) in spite of demand from the publisher then my paper may be rejected or removed from the website anytime and may not be consider for verification. I accept the fact that As the content of this paper and the resubmission legal responsibilities and reasons are only mine then the Publisher (Airo International Journal/Airo National Research Journal) is never responsible. I also declare that if publisher finds Any complication or error or anything hidden or implemented otherwise, my paper maybe removed from the website or the watermark of remark/actuality maybe mentioned on my paper. Even if anything is found illegal publisher may also take legal action against me

संदीप कुमार  
प्रोफ. (डॉ.) आर. के. एस अरोडा

\*\*\*\*\*